

डिजिटल डिवाइस और सोशल मीडिया का भारतीय ग्रामीण समाज पर प्रभाव

डॉ. प्रियंका पांडेय

अतिथि विद्वान - समाजशास्त्र विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय ग्रामीण समाज पर डिजिटल डिवाइस (जैसे स्मार्टफोन) और सोशल मीडिया (व्हाट्सएप, फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि) के प्रभाव का विश्लेषण करता है। 2025 में भारत के सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 95.8 करोड़ पहुंच गई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों का हिस्सा 57% (लगभग 54.8 करोड़) है। सकारात्मक प्रभावों में कृषि उत्पादकता में वृद्धि, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, वित्तीय समावेशन तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी शामिल है। वहीं नकारात्मक प्रभावों में पारंपरिक सामाजिक संपर्कों का ह्रास, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, गलत सूचना का प्रसार, गोपनीयता उल्लंघन तथा सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण प्रमुख हैं। द्वितीयक स्रोतों और मौजूदा सर्वेक्षणों के आधार पर यह अध्ययन सुझाव देता है कि डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों तथा जागरूकता अभियानों से संतुलित विकास संभव है।

कीवर्ड्स

डिजिटल डिवाइस, सोशल मीडिया, भारतीय ग्रामीण समाज, डिजिटल डिवाइड, डिजिटल साक्षरता, कृषि प्रभाव, मानसिक स्वास्थ्य, गलत सूचना।



परिचय

भारत में डिजिटल क्रांति ने ग्रामीण क्षेत्रों को गहराई से प्रभावित किया है। रिलायंस जियो जैसी कंपनियों के कारण सस्ते डेटा और स्मार्टफोन उपलब्ध होने से ग्रामीण भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ी है। 2025 में ग्रामीण क्षेत्र अब कुल सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का 57% हिस्सा रखते हैं (लगभग 54.8 करोड़), जबकि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण विकास दर चार गुना अधिक है। डिजिटल डिवाइस और सोशल मीडिया ने ग्रामीण जीवन के विभिन्न आयामों को बदला है। सकारात्मक रूप से, किसान बाजार मूल्यों, मौसम पूर्वानुमान और कृषि सलाह के लिए ऐप्स का उपयोग कर रहे हैं, जिससे उत्पादकता बढ़ी है। शिक्षा में SWAYAM, DIKSHA जैसे प्लेटफॉर्म दूरदराज के गांवों तक पहुंच रहे हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में टेलीमेडिसिन (e-Sanjeevani) ने चिकित्सा पहुंच आसान की है। वित्तीय समावेशन में UPI और डिजिटल बैंकिंग ने नकदी पर निर्भरता कम की है। सरकारी योजनाओं (जैसे PMGDISHA, BharatNet) ने डिजिटल इंडिया अभियान के तहत ग्रामीणों को जोड़ा है।

लेकिन नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं हैं। सोशल मीडिया ने पारंपरिक आमने-सामने की बातचीत को कम किया है। ग्रामीण युवा शहरी जीवनशैली से तुलना कर मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद का शिकार हो रहे हैं। गलत सूचना तेजी से फैलती है, जिससे चुनावी प्रभाव, स्वास्थ्य अफवाहें और सामाजिक अशांति पैदा होती है। महिलाओं और दलित-आदिवासी समुदायों में डिजिटल साक्षरता की कमी (ग्रामीण महिलाओं में इंटरनेट पहुंच मात्र 14% बनाम पुरुषों में 32%) से असमानता बढ़ी है।

शोध पद्धति

यह शोध द्वितीयक डेटा विश्लेषण पर आधारित है। मुख्य स्रोतों में शामिल हैं:

- IAMA और Kantar की "Internet in India Report 2025" (ग्रामीण इंटरनेट उपयोगकर्ता आंकड़े)।



- TRAI की टेलीकॉम सब्सक्रिप्शन रिपोर्ट (जून 2025)।
- NSSO की Comprehensive Modular Survey: Telecom 2025 (मोबाइल स्वामित्व और इंटरनेट उपयोग)।
- विभिन्न शोध पत्र जैसे “Negative Effects of Social Media in Rural India” (IJIRT, 2025) जिसमें कर्नाटक के चार जिलों (तुमकुरु, कोलार आदि) में 502 उत्तरदाताओं का सर्वेक्षण शामिल है।
- “The Impact of Digital Literacy on Social Inequality in Rural India” (IRE Journals, 2025) तथा “Impact of Digitalisation on Rural India” (IJRISS, 2024)।

विधि में साहित्य समीक्षा, रिपोर्टों का तुलनात्मक विश्लेषण तथा उपलब्ध सर्वेक्षण आंकड़ों (जैसे 77% उत्तरदाताओं का मानना कि सोशल मीडिया पारंपरिक मूल्यों को प्रभावित करता है) का उपयोग किया गया। प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया; इसके बजाय मौजूदा विश्वसनीय स्रोतों का संश्लेषण किया गया। डेटा को सकारात्मक-नकारात्मक प्रभावों में वर्गीकृत कर गुणात्मक-मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया। सीमाएं: केवल द्वितीयक स्रोत, क्षेत्रीय विविधता पूर्ण रूप से कवर नहीं।

निष्कर्ष

डिजिटल डिवाइस और सोशल मीडिया ने भारतीय ग्रामीण समाज को सशक्त बनाया है, लेकिन साथ ही चुनौतियां भी पैदा की हैं। सकारात्मक पक्ष में आर्थिक विकास, शिक्षा-स्वास्थ्य पहुंच और सामाजिक जुड़ाव प्रमुख हैं, जबकि नकारात्मक पक्ष में सामाजिक अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य हास (49.6% उत्तरदाताओं ने प्रभाव माना), गोपनीयता उल्लंघन (76.89%), गलत सूचना (67.73%) और सांस्कृतिक क्षरण (77.29%) शामिल हैं।2898e1



ग्रामीण-शहरी डिजिटल डिवाइड अभी भी मौजूद है; महिलाओं, दलितों और गरीब परिवारों में साक्षरता की कमी असमानता बढ़ा रही है। निष्कर्ष यह है कि बिना डिजिटल साक्षरता, जागरूकता और नियंत्रण के डिजिटल क्रांति पूर्ण लाभ नहीं दे सकती।

संदर्भ

- [1]. IAMAI & Kantar. (2025). Internet in India Report 2025. (<https://bestmediainfo.com/insights/indias-internet-users-near-one-billion-in-2025-rural-india-leads-growth-iamai-11056899>)
- [2]. Telecom Regulatory Authority of India (TRAI). (2025). Highlights of Telecom Subscription Data as on 30th June 2025.
- [3]. National Sample Survey Office (NSSO). (2025). Comprehensive Modular Survey: Telecom, 2025.
- [4]. Rousseau S., J.M., Bajpai, H., & Chawla, O. (2025). Negative Effects of Social Media in Rural India. International Journal of Innovative Research in Technology (IJIRT), Volume 11, Issue 10. (https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT173851_PAPER.pdf)
- [5]. Chawan, Y.I. (2025). The Impact of Digital Literacy on Social Inequality in Rural India. ICONIC RESEARCH AND ENGINEERING JOURNALS, Volume 8, Issue 8. (<https://www.irejournals.com/formatedpaper/1707111.pdf>)
- [6]. Ahir, R., & Jain, J. (2024). Impact of Digitalisation on Rural India. International Journal of Research and Innovation in Social Science (IJRISS). (<https://rsisinternational.org/journals/ijriss/articles/impact-of-digitalisation-on-rural-india/>)
- [7]. DataReportal. (2025). Digital 2025: India.
- [8]. Ministry of Electronics and Information Technology. (2025). Digital India Reports (various).

